श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम्।।20।।

श्रुतज्ञान मतिज्ञान पूर्वक होता है। वह दो प्रकार का, अनेक प्रकार का और बारह प्रकार का है।।20।।

www.JainKosh.org

श्रुतज्ञान

मतिज्ञान से जाने हुए पदार्थ का अवलम्बन कर अन्य पदार्थ का ज्ञान

www.JainKosh.org

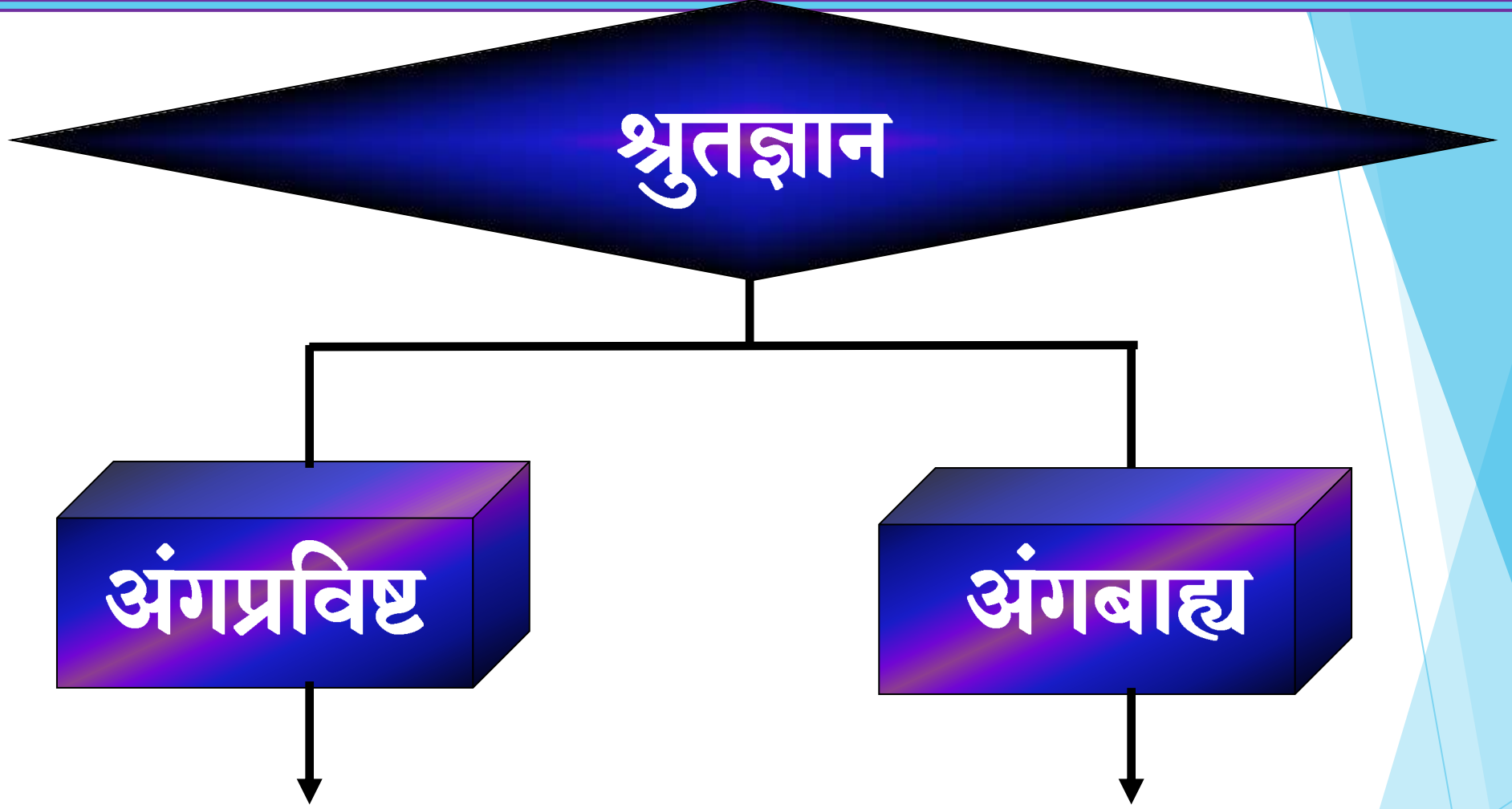

www.JainKosh.org

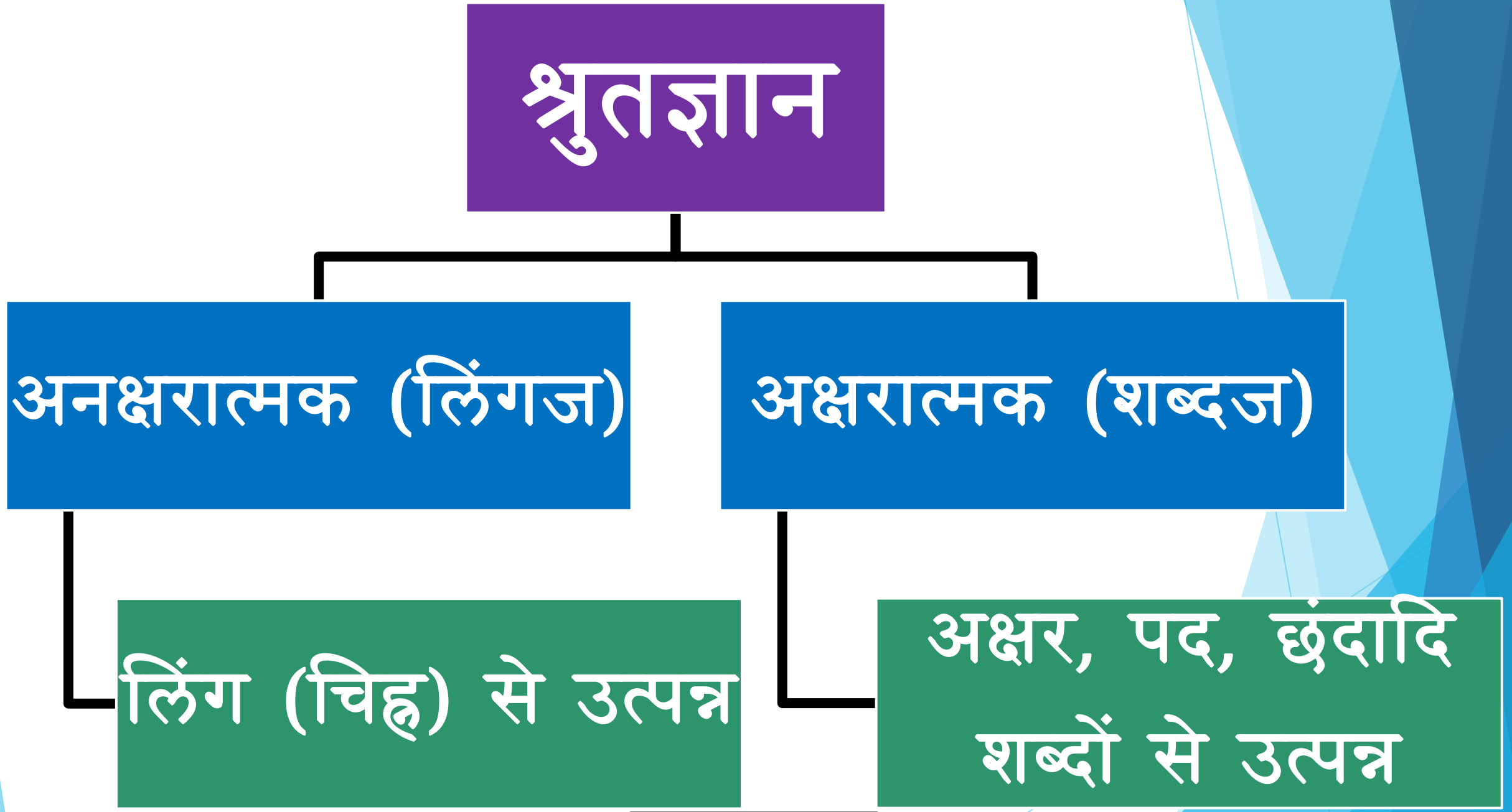

श्रुतज्ञान

- अनक्षरात्मक (लिंगज)
  - लिंग (चिह्न) से उत्पन्न
- अक्षरात्मक (शब्दज)
  - अक्षर, पद, छंदादि शब्दों से उत्पन्न

www.JainKosh.org

	अनक्षरात्मक	अक्षरात्मक
स्वामी	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक	सिर्फ पंचेन्द्रिय
प्रमुखता	इससे कुछ व्यवहार प्रवृत्ति नहीं, इसलिए प्रमुख नहीं	सर्व व्यवहार (लेन-देन, शास्त्र पठनादि) का मूल इसलिए प्रमुख
उदाहरण	शीतल पवन का स्पर्श हुआ :– शीतल पवन का जानना - मतिज्ञान ये वायु की प्रवृत्ति वाले को हितकारी नहीं - श्रुतज्ञान	"जीव अस्ति" :– ऐसा शब्द सुना - मतिज्ञान जीव पदार्थ का ज्ञान हुआ - श्रुतज्ञान

www.JainKosh.org

अन्य प्रकार से श्रुत ज्ञान के भेद

श्रुत(अक्षरात्मक) ज्ञान

द्रव्य श्रुत

पुद्गल द्रव्य स्वरूप वर्ण, शब्द, वाक्य, पद द्रव्य श्रुत है । जिनवाणी द्रव्य श्रुत है ।

भाव श्रुत

द्रव्य श्रुत के सुनने से उत्पन्न हुआ जो ज्ञान है वह भावश्रुत ज्ञान है ।

मतिज्ञान और श्रुतज्ञान में अंतर

मतिज्ञान	श्रुतज्ञान
मतिज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम निमित्त	श्रुतज्ञानावरण कर्म का क्षयोपशम निमित्त
दर्शनोपयोग पूर्वक होता	मतिज्ञानोपयोग पूर्वक होता
मतिज्ञान के बाद श्रुतज्ञान होने का नियम नहीं	श्रुतज्ञान के पहले मतिज्ञान नियम से होता है, श्रुतपूर्वक भी श्रुत होता है

www.JainKosh.org

मतिज्ञान और श्रुतज्ञान में अंतर

मतिज्ञान	श्रुतज्ञान
३३६ भेद है	२ भेद है
तत्त्व सुना - समझा जा सकता है	तत्त्व निर्णय इसके माध्यम से होता है
पाँचों इन्द्रियों का निमित्त मुख्य है	सैनी जीवों को मन की मुख्यता है

www.JainKosh.org

भवप्रत्ययोऽवधिर्देवनारकाणाम्।।21।।

भवप्रत्यय अवधिज्ञान

देव और नारकियों क होता है।।21।।

www.JainKosh.org

क्षयोपशमनिमित्तः षड्विकल्पः शेषाणाम्।।22।।

क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान छह प्रकार का है, जो शेष अर्थात् तिर्यंचों और मनुष्यों क होता है।।22।।

www.JainKosh.org

अवधिज्ञान

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव
को मर्यादा लिये रूपी पदार्थों
को स्पष्ट जानना

www.JainKosh.org

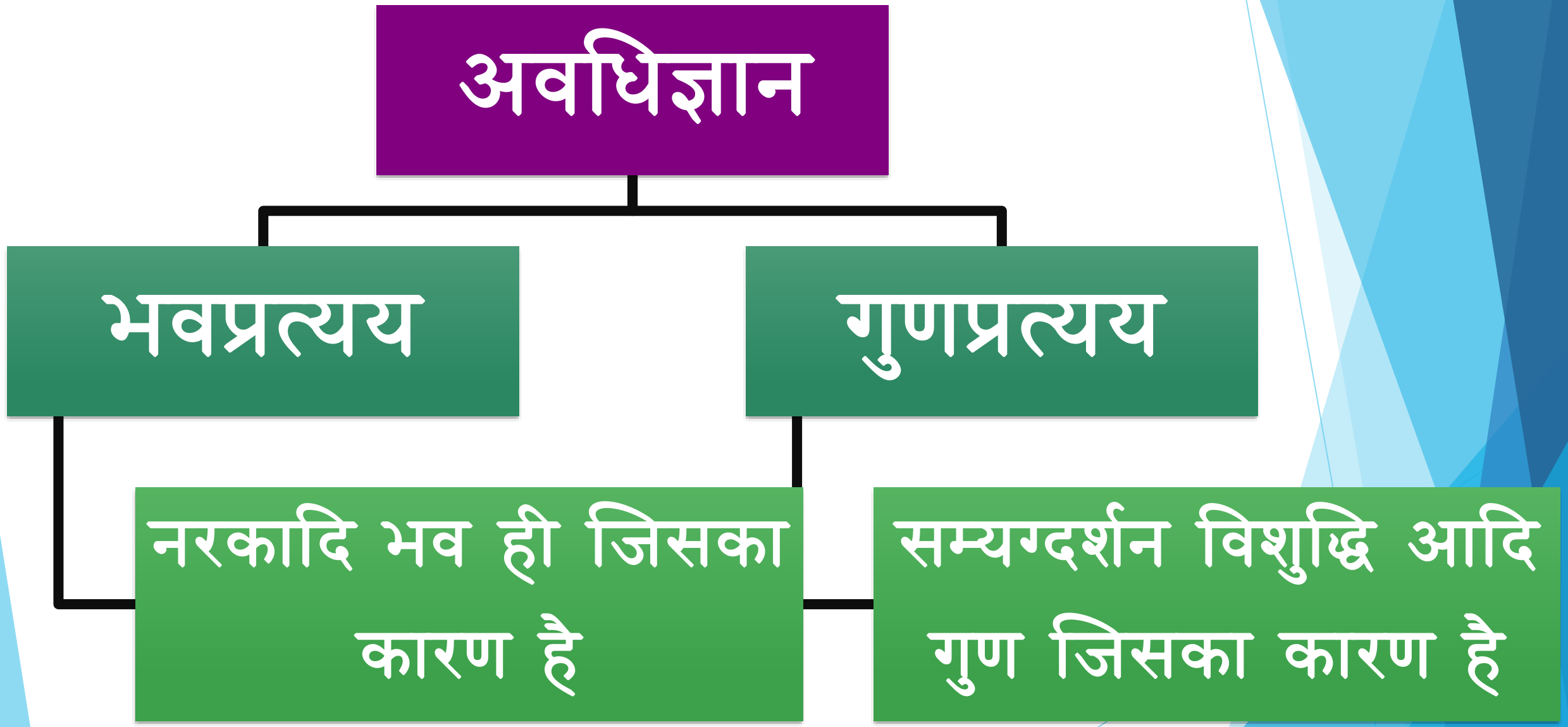

अवधिज्ञान
भवप्रत्यय
गुणप्रत्यय
नरकादि भव ही जिसका कारण है
सम्यग्दर्शन विशुद्धि आदि गुण जिसका कारण है

गुणप्रत्यय अवधिज्ञान के 6 भेद

अनुगामी	अन्य क्षेत्र / भव में साथ जाए
अननुगामी	अन्य क्षेत्र / भव में साथ न जाए
वर्धमान	बढता हुआ
हीयमान	घटता हुआ
अवस्थित	न घटे, न बढ़े
अनवस्थित	घटता-बढ़ता रहे

अनुगामी

क्षेत्रानुगामी	भवानुगामी	उभयानुगामी
अन्य क्षेत्र में गमन करने पर भी नष्ट ना हो ।	भव के बदलने पर भी नष्ट ना हो ।	क्षेत्र और भव के बदलने पर भी नष्ट ना हो ।

ऐसे ही अननुगामी पर लगाना ।

www.JainKosh.org

अवधिज्ञान

देशावधि	परमावधि	सर्वावधि
भवप्रत्यय, गुणप्रत्यय	गुणप्रत्यय	गुणप्रत्यय

www.JainKosh.org

परमावधि और सर्वावधि
के स्वामी
नियम से उसी भव में
मोक्ष जाते हैं।

www.JainKosh.org

ऋजुविपुलमती मनःपर्ययः।।23।।

ऋजुमति और विपुलमति मन:पर्ययज्ञान हैं।।23।।

www.JainKosh.org

विशुद्धयप्रतिपाताभ्यां तद्विशेषः।।24।।

विशुद्धि और अप्रतिपात को अपेक्षा इन दोनों में अन्तर है।।24।।

www.JainKosh.org

मन:पर्ययज्ञान

द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव की मर्यादा लिए दूसरे के मन में स्थित रूपी पदार्थ को जाने, जिसका -

चिंतित	अचिंतित	अर्द्धचिंतित
चिंतन किया हो	चिंतन किया जायेगा	चिंतन किया जा रहा है, अर्थात् जो सम्पूर्ण चिंतया नहीं
भूत में	भविष्य में	वर्तमान में

www.JainKosh.org

मनःपर्ययज्ञान

ऋजुमति

सरल मन के विषय को जाने

विपुलमति

सरल - कुटिल दोनों मन के विषय को जाने

www.JainKosh.org

ऋजुमति मन:पर्यय

त्रिकाल विषयक पुद्गल द्रव्यको किसी जीव द्वारा वर्तमान काल में चिंतवन कीए जाने पर जानता है ।

विपुलमति मन:पर्ययज्ञान

भूत में चिंतित

वर्तमान में अर्द्धचिंतित

भविष्य में अचिंतित

त्रिकाल संबंधी पुद्गल द्रव्य को

जानता है ।

www.JainKosh.org

ऋजुमति - विपुलमति में अंतर

विशुद्धि

ऋजुमति	विपुलमति
आत्मा को कम विशुद्धता होती है	अधिक विशुद्धता होती है

www.JainKosh.org

ऋजुमति - विपुलमति में अंतर

प्रतिपाती

ऋजुमति	विपुलमति
संयम परिणामों में गिरावट हो सकती है (प्रतिपाती)	संयम परिणामों में गिरावट नहीं हो सकती है (अप्रतिपाती)

www.JainKosh.org

ऋजुमति – विपुलमति मोक्ष का नियम

ऋजुमति	विपुलमति
उसी भव में मोक्ष जाने का नियम नहीं है	नियम से उसी भव में मोक्ष जाते हैं

www.JainKosh.org

मन:पर्यय की क्षेत्र की मर्यादा

	ऋजुमति	विपुलमति
जघन्य	पृथक्त्व कोस (2-3 कोस)	पृथक्त्व योजन (8-9 योजन)
उत्कृष्ट	पृथक्त्व योजन (7-8 योजन)	मनुष्य लोक

www.JainKosh.org

मन:पर्यय की काल की मर्यादा

	ऋजुमति	विपुलमति
जघन्य	2-3 भव	8-9 भव
उत्कृष्ट	7-8 भव	(पल्य)/∅

* अतीत-अनागत 2 भव, वर्तमान को मिलाकर 3 भव । इसी प्रकार सभी भेदों में समझना ।

विपुलमति मन:पर्यय ज्ञान का उत्कृष्ट क्षेत्र

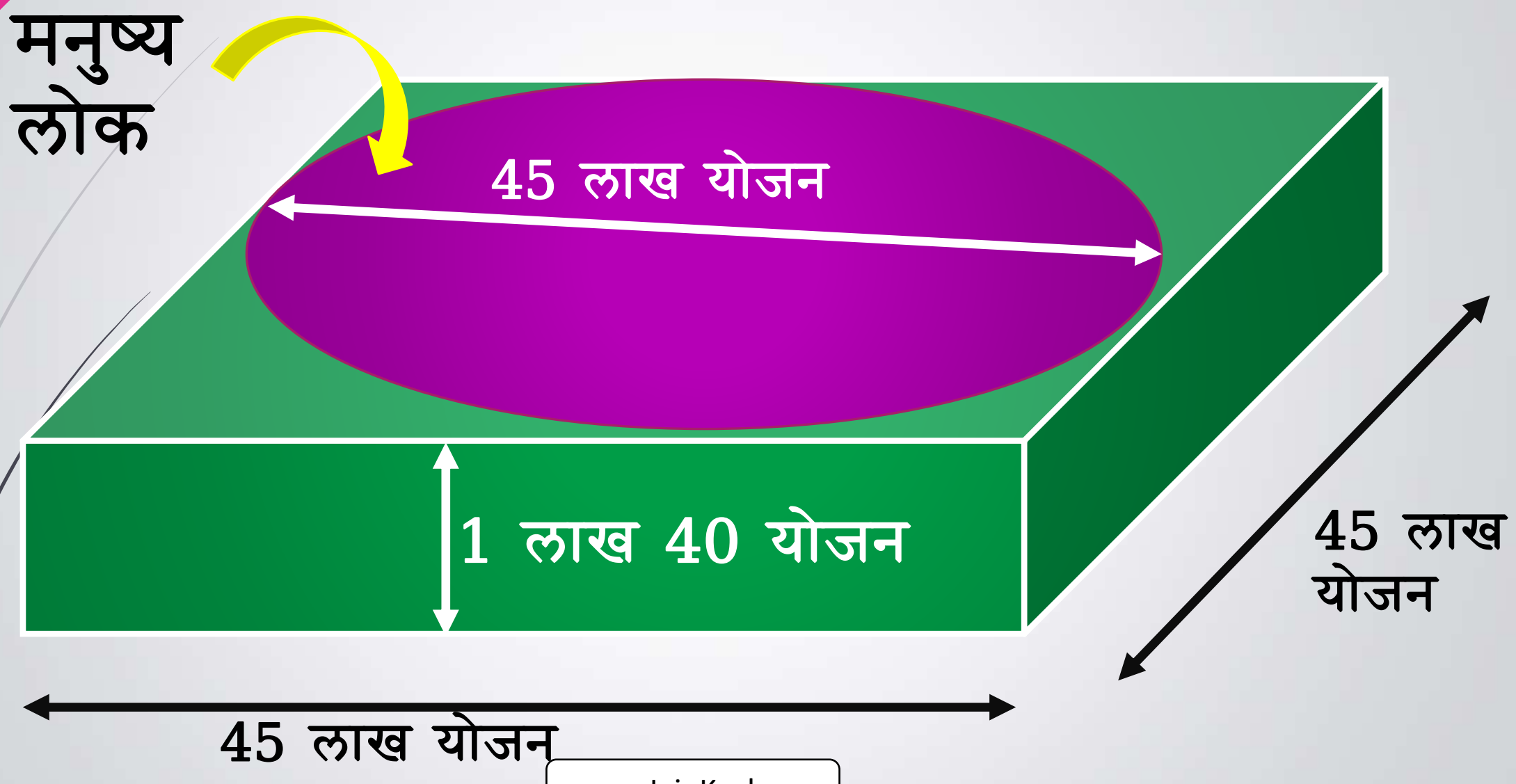

www.JainKosh.org

विशुद्धिक्षेत्रस्वामिविषयेभ्योऽवधि मनःपर्याययोः।।25।।

विशुद्धि, क्षेत्र, स्वामी और विषय को अपेक्षा अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में भेद है।।25।।

www.JainKosh.org

अवधि-मन:पर्यय ज्ञान में अंतर

	अवधिज्ञान	मन:पर्ययज्ञान
विशुद्धि	कम विशुद्ध	अधिक विशुद्ध
क्षेत्र		
उत्पत्ति क्षेत्र	त्रस नाड़ी	मनुष्य लोक
विषय क्षेत्र	समस्त लोक	45 लाख योजन का घनप्रतर रूप क्षेत्र

अवधि-मन:पर्यय ज्ञान में अंतर

	अवधिज्ञान	मन:पर्ययज्ञान
स्वामी	चारों गति क सैनी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव	-कर्मभूमि क गर्भज मनुष्यों को -जो संयमी हो -जो वर्धमान चारित्र सहित हो -जिसक 7 ऋद्धियों में से कम से कम 1 ऋद्धि हो

www.JainKosh.org

अवधि-मन:पर्यय ज्ञान में अंतर

	अवधिज्ञान	मन:पर्ययज्ञान
विषय	परमाणु तक	अवधिज्ञान क विषय का अनंतवाँ भाग (मन क विकल्प ज्यादा सूक्ष्म होते हैं)

www.JainKosh.org